विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 18 : नई दिल्ली : 27 जुलाई- 2 अगस्त 2018

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण सानंद सुखसाता पूर्वक चेन्नई महानगर के माधावरम में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। आचार्यप्रवर ने कोलकाता चतुर्मास के बाद चेन्नई चातुर्मासिक प्रवेश तक करीब २६१५ कि.मी. की पदयात्रा की, जो दो चतुर्मासों के बीच होने वाली आचार्यप्रवर की अब तक की सर्वाधिक लम्बी यात्रा है। आचार्य तुलसी के अतिरिक्त तेरापंथ की आचार्य परंपरा में किसी आचार्यप्रवर द्वारा एक वर्ष में की जाने वाली यह सर्वाधिक यात्रा रही। सन् १६६०-६१ में आचार्य तुलसी द्वारा कोलकाता से राजनगर तक करीब ३०५५ कि.मी. की यात्रा की गई थी। अहिंसा यात्रा के अंतर्गत पूज्यप्रवर ने चेन्नई पहुंचने तक लगभग ६६५६ किलोमीटर की पदयात्रा सम्पन्न कर ली है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्रीजी ने चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर स्वागत समारोह में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण का स्वागत किया तो अगले दिन तमिलनाडु के राज्यपाल महोदय ने पूज्यप्रवर का अभिनन्दन किया। उसके अगले दिन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री भागवतजी पूज्यसन्निधि में समुपस्थित हुए। इस प्रकार प्रवेश के साथ ही तीन दिन तक बृहत् कार्यक्रम समायोजित हुए, जो चेन्नई चतुर्मास के लिए शुभ संकेत माने जा सकते हैं। चेन्नई के सिवाय भी सैंकड़ों सेवार्थी पूज्यप्रवर की सेवा में पहुंच चुके हैं और यह क्रम निरंतर जारी है। दर्शनार्थियों और सेवार्थियों की विशाल उपस्थिति के सामने चेन्नईवासियों द्वारा की गई विराट व्यवस्थाएं भी बौनी सिद्ध होती-सी दिख रही हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण चेन्नई में

पूज्यचरणों से पावन बने अन्नानगर और अयनावरम्

१७ जुलाई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः अमंजीकरै से अन्नानगर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में अनेक श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन करने और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सुअवसर प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर एक अक्षम श्रद्धालु महिला को दर्शन देने उसके घर भी पधारे। पूज्यप्रवर अन्नानगर स्थित श्री राजेश कोठारी परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का प्रातराश यहीं हुआ। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर कोठारी परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

प्रातराश के उपरान्त आचार्यप्रवर मुनि संभवकुमारजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान पर पधारे। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास इसी स्थान में हो रहा था। आचार्यप्रवर आज के मुख्य प्रवचन स्थल हेतु 'अन्ना आरंगम्' में पधारे।

वहां आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में तेरापंथ समाज अन्नानगर की महिलाओं ने गीत का संगान किया। श्री रेखचन्द धोका, स्थानकवासी जैन संघ-अन्नानगर की ओर से श्री प्रेम मेहता, श्री उम्मेद बोकड़िया, श्रीमती प्रमिला गुलेचा, सुषमा व प्रेरणा भटेरा, सुश्री प्रांजुल बोकड़िया, श्री रोहन बोकड़िया, श्री रणजीतसिंह बोकड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति के माध्यम से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। स्थानीय ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी प्रस्तुति दी। बोकड़िया परिवार की सदस्याओं ने गीत के द्वारा अपने उल्लसित भावों को अभिव्यक्ति दी।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में उपस्थित जनमेदिनी को कथानक के माध्यम से चोरी से बचने की प्रेरणा प्रदान की। अन्नानगरवासियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से संकल्पत्रयी स्वीकार की।

स्थानीय विधायक श्री एम.के.मोहन ने कहा--'मैं तमिलनाडु सरकार के विशिष्ट अतिथि आचार्यश्री महाश्रमणजी का अपने विधानसभा क्षेत्र में हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि मुझे आप जैसे राष्ट्रसंत के दर्शन करने का मौका मिला। आपने हमारे क्षेत्र को पावन बनाया है। इसके लिए मैं एक बार पुनः आपको कोटि-कोटि नमन करता हूं।'

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यप्रवर 'अन्ना आरंगम्' से प्रस्थान कर अन्नानगर में ही स्थित श्री उम्मेदसिंह बोकड़िया परिवार के निवास स्थान पर पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर की अनुग्रहवृष्टि में अभिस्नात बोकड़िया परिवार हर्षविभोर था। आज का प्रातःकालीन विहार कुल ३.५ कि.मी. का रहा।

सायंकाल करीब पांच बजे पूज्यप्रवर अन्नानगर से अयनावरम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में अनेक लोगों ने अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ सुना। पूज्यप्रवर मार्ग में कुछ अतिरिक्त दूरी स्वीकार कर एक अक्षम श्रद्धालु को दर्शन देने उसके घर भी पधारे। आचार्यप्रवर का अयनावरम स्थित जैन स्थानक में भी पदार्पण हुआ। स्थानकवासी समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने बड़ी संख्या में उपस्थित अन्य जैन समाज के लोगों को मंगल प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यप्रवर के स्वागत में अयनावरम के न केवल तेरापंथ समाज, अपितु अन्य जैन समाज के लोग भी बड़ी संख्या में उमड़ आए। चारों ओर हर्षोल्लास छाया हुआ था। पूज्यप्रवर ३.६ कि.मी. का विहार कर अयनावरम स्थित श्री जैन श्वेताम्बर दादाबाड़ी परिसर में पधारे। परिसर में स्थित श्री महावीर जैन भवन में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

आज मध्याह्न में अयनावरम में चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-चेन्नई की ओर से दीक्षार्थियों की शोभा यात्रा निकली और रात्रि में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के तत्त्वाधान में दीक्षार्थियों का मंगल भावना समारोह समायोजित हुआ।

भव्य समणी दीक्षा समारोह

१८ जुलाई। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः अयनावरम से पेरंबुर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में अनेक श्रद्धालु अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगलपाठ श्रवण से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर मंगलापुर में स्थित श्री सुकनराज कोठारी परिवार के निवास स्थान पर पधारे। आज का प्रातराश यहीं हुआ। पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर कोठारी परिवार आह्लाद की अनुभूति कर रहा था।

प्रातराश के उपरान्त आचार्यप्रवर मंगलापुर से प्रस्थान कर पेरंबुर में पधारे। यहां स्थित नॉर्थटाउन में आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम समणी दीक्षा समारोह के रूप में आयोजित हुआ। पूज्यप्रवर प्रवचन पंडाल में पधारे, तब दीक्षा समारोह प्रारम्भ होने के निर्धारित समय में काफी समय अवशिष्ट था। इसलिए पूज्यप्रवर की कृपा से उस समय नॉर्थटाउनवासियों को अपनी भावाभिव्यक्ति करने का अवसर प्राप्त हो गया। इसी क्रम में नॉर्थटाउन के निर्माता श्री मेघराज लूणावत, श्रीमती निर्मला गुलेचा, स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष श्री कमल छल्लाणी और श्री संपत सेठिया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ समाज-नॉर्थटाउन की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया।

दीक्षा समारोह का प्रारम्भ पूज्यप्रवर द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। मुमुक्षु श्वेता और मुमुक्षु प्रेक्षा ने दीक्षार्थिनी बहनों का परिचय प्रस्तुत किया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था की ओर श्री मोतीलाल जीरावला ने दीक्षार्थी आज्ञा पत्र का वाचन किया। दीक्षार्थिनी बहनों के परिजनों ने आज्ञा पत्र पूज्यप्रवर को समर्पित किए। दीक्षार्थिनी मुमुक्षु खुशबू, मुमुक्षु हेतल और मुमुक्षु अंकिता ने पूज्यचरणों में अपना सर्वात्मना समर्पण करते हुए शीघ्रातिशीघ्र दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की।

'तेरापंथ की दीक्षा प्रणाली' विषय पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, 'दीक्षा क्यों' विषय पर मुख्यनियोजिकाजी तथा 'सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्ष मार्गः' विषय पर मुख्यमुनिश्री का उद्बोधन हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'त्याग से शांति मिलती है। सुविधा तो साधनों से मिल सकती है, किन्तु शांति साधना से मिल सकती है। जितना-जितना आदमी सुविधा की आसक्ति से बचेगा, उतना-उतना साधना में आगे बढ़ सकेगा। जितना-जितना साधना में आगे बढ़ेगा, उतनी-उतनी शांति वृद्धिंगत हो सकेगी। तीन मुमुक्षु दीक्षार्थिनी बाइयां साधना के पथ पर अभ्युत्थान कर रही हैं। आत्मिक दृष्टि से अभ्युत्थान करना श्रेयस्कर होता है।'

पूज्यप्रवर ने दीक्षार्थिनी बहनों के परिजनों से मौखिक स्वीकृति प्राप्त की। तत्पश्चात् पूज्यप्रवर ने तीनों दीक्षार्थिनियों की वैराग्य भावना का अंतिम परीक्षण किया। पूज्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में जैन संप्रदायों की चर्चा करते हुए तेरापंथ की दीक्षा व्यवस्था की जानकारी प्रदान की तथा मुनिचर्या व समणचर्या की भिन्नता के विषय में संक्षिप्त अवगति भी दी।

पूज्यप्रवर ने मंगल मुहूर्त में तीनों दीक्षार्थिनी बहनों को समणी दीक्षा प्रदान की तो उपस्थित विशाल जनमेदिनी ने 'ऊँ अर्हम्' की तुमुल ध्वनि से हर्ष व्यक्त किया। नवदीक्षित समणियों ने पूज्यप्रवर को सविधि वंदन किया। तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने उन्हें अतीत की आलोचना करवाई। आचार्यप्रवर द्वारा आर्षवाणी में आशीर्वाद प्रदान किया गया। तत्पश्चात् पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित समणियों को समणी जीवन के नए नाम प्रदान किए, जो पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं।

पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित समणियों को दीक्षांत संबोध प्रदान करते हुए प्रत्येक क्रिया को संयम से संयुक्त रखने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने उन्हें आचार्यप्रवर के अनुशासन के अंतर्गत साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी की देखरेख और आध्यात्मिक निर्देशन में साधना करने का निर्देश दिया। उपस्थित जनमेदिनी ने 'वंदामि नमंसामि' का उच्चारण कर नवदीक्षित समणियों का अभिवादन किया।

जब भी मुनि/साध्वी दीक्षा होती है तब आचार्यप्रवर नवदीक्षित मुनियों/साध्वियों को कार्यक्रम के पश्चात ग्रासदान संस्कार के अंतर्गत (खाद्य सामग्री) प्रदान करते हैं, जिसे 'अनुशासन का ओज आहार' से संज्ञापित किया गया है। समणीवृंद की दीक्षा के पश्चात उन्हें लेखन सामग्री प्रदान की जाती थी। आचार्यप्रवर ने गत समणी दीक्षा समारोह में उसमें परिवर्तन करते हुए कार्यक्रम के पश्चात नवदीक्षित समणी के लिए संस्कृत भाषा में आशु कविता के रूप में श्लोक रचना की थी। पूज्यप्रवर ने आज उस उपक्रम को कार्यक्रम के दौरान ही संपादित किया। प्रत्येक नवदीक्षित समणी के लिए आशु कविता के रूप में एक-एक श्लोक की रचना की, जो इस प्रकार है--

समणी आलोकप्रज्ञाजी के लिए--

आलोको जीवने तिष्ठेत् ज्ञानं प्रकाशदायकम्।
ज्ञानेन सह चारित्रं नैर्मल्यं संव्रजेत् शुभम्।।

समणी हिमांशुप्रज्ञाजी के लिए--

हिमांशुरिव नैर्मल्यं प्राप्नुयात् जीवने शुभम्।
शीतलता सदा तिष्ठेत् प्रातिकूल्येऽपि मानसे।।

समणी गंभीरप्रज्ञाजी के लिए--

गंभीरः सागरः प्रोक्तः गांभीर्यं वरदं भवेत्।
चिन्तने जल्पने चाऽपि गांभीर्यं स्फुरितं भवेत्।।

कार्यक्रम में तेरापंथ समाज और अन्य जैन समाज के हजारों लोग उपस्थित थे। विराट उपस्थिति के सामने विशाल पंडाल भी छोटा पड़ गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम के उपरान्त नॉर्थटाउन में ही स्थित साध्वी तितिक्षाश्रीजी, साध्वी लावण्यश्रीजी और साध्वी किरणयशाजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान पर आचार्यप्रवर का पावन पदार्पण हुआ। तदुपरान्त आचार्यप्रवर श्री सुभाष बच्छावत परिवार के निवास स्थान पर पधारे। आज सायं तक प्रवास यहीं हुआ। आज का प्रातःकालीन विहार कुल करीब ३.३ कि.मी. का रहा।

पुरुषवाक्कम् में महापुरुष

सायंकाल करीब ४.३० बजे आचार्यप्रवर पेरंबुर से पुरुषवाक्कम् की ओर प्रस्थित हुए। विहार के दौरान अनेकानेक लोगों ने अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट आचार्यप्रवर के दर्शन किए और श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर संबंधित लोगों की प्रार्थना पर कोसापेट स्थित जैन स्थानक में भी पधारे। वहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में स्थानकवासी समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों को पावन पाथेय प्रदान किया। पुरुषवाक्कम जैन स्थानक से जुड़े लोगों के निवेदन पर पूज्यप्रवर पुरुषवाक्कम् में स्थित जैन स्थानक में भी पधारे। वहां भी संक्षिप्त कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें स्थानकवासी समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए श्रीचरणों में कृतज्ञभाव अर्पित किए। पूज्यप्रवर ने उपस्थित जनता को पावन संबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर ने अनेक अक्षम लोगों को उनके घर पधारकर दर्शन दिए।

आचार्यप्रवर विहार के दौरान मुनि जिनभक्तजी और साध्वी समताप्रभाजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान में भी पधारे। तेरापंथ युवक परिषद-चेन्नई द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में भी पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। सायंकालीन विहार के दौरान यदा-कदा हल्की बूंदाबांदी हो रही थी। इस कारण एक बार कहीं रुकने की अपेक्षा महसूस हुई तो आचार्यप्रवर का एक श्रद्धालु परिवार के निवास स्थान पर पदार्पण हो गया। प्रकृति के सहयोग से मिले इस वरदान को पाकर वह श्रद्धालु परिवार अतिशय प्रफुल्लित था।

आज के प्रायः पूरे विहार में आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ अन्य जैन समाज के लोग भी बड़ी संख्या में यत्र-तत्र खड़े थे। पूज्यप्रवर का जहां-जहां पदार्पण हो रहा था, वहां आसपास रहने वाले लोगों का जमघट लग रहा था। इस प्रकार पूरा विहार मार्ग महाश्रमणमय बना हुआ था।

पूज्यप्रवर साध्वीवर्याजी को दर्शन देने 'अमृत हॉस्पिटल' में पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान होकर उन्हें उपासना का अवसर प्रदान किया। पूज्यप्रवर का यह अनुग्रह साध्वीवर्याजी को अहोभाव की अनुभूति करवा रहा था।

आचार्यप्रवर करीब ५.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर लगभग ६.२२ बजे पुरुषवाक्कम् में स्थित श्री प्रकाश मूथा परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर मूथा परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था। रात्रि में गुरुवंदना,

प्रतिक्रमण, अर्हतवन्दना आदि उपक्रम श्री रतन सेठिया परिवार के निवास स्थान में समायोजित हुए। आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह प्राप्त कर सेठिया परिवार प्रमुदित था।

जैनाचार्यों आदि की संगीति में आचार्यप्रवर का पावन पदार्पण

१६ जुलाई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः पुरुषवाक्कम् से प्रस्थान कर किल्पॉक स्थित श्री पुखराज बड़ोला के निवास स्थान पर पधारे। आज का प्रातराश यहीं हुआ। आचार्यप्रवर की कृपावृष्टि में अभिस्नात बड़ोला परिवार हर्षाभिभूत बना हुआ था।

प्रातराश के उपरान्त पूज्यप्रवर ए.एम.के.एम. जैन मेमोरियल सेंटर में पधारे। आज यहां जैन महासंघ-चेन्नई द्वारा चेन्नई में प्रवासित जैन आचार्यों आदि की एक संगीति आयोजित की गई थी। ज्ञातव्य है कि इस संगीति के आयोजन स्थल को लेकर विभिन्न मत थे। अधिकांश लोगों का यही कहना था कि इसे आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रवास स्थल में ही आयोजित किया जाए। जब जैन महासंघ के लोग पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में इस विषय की बात को लेकर पहुंचे, उस समय आचार्यप्रवर ने जो फरमाया, उसका भाव इस प्रकार था--'जैन महासंघ जिस दिन, जिस समय और जहां मीटिंग आयोजित करेगा, वहीं पहुंचने का भाव है।'

इतने बड़े और प्रतिष्ठित धर्माचार्य की सहज उदारता को देखकर समागत लोग अभिभूत थे। उसके बाद जैन महासंघ की ओर से आयोजन स्थल के रूप में ए.एम.के.एम. जैन मेमोरियल सेंटर का प्रस्ताव रखा गया तो आचार्यप्रवर ने उसे तुरन्त स्वीकार कर लिया। पूज्यप्रवर की स्वीकृति से जैन महासंघ की राह आसान हो गई। संभवतः यही कारण रहा कि अन्य आचार्यों आदि की भी स्वीकृति, जो कठिन लग रही थी, आसानी से प्राप्त हो गई।

पूज्यप्रवर संगीति स्थल पर विराजमान हुए। कुछ समय बाद अन्य आचार्यों आदि का भी समागमन हो गया। यथाविधि अगवानी आदि का क्रम रहा। पूज्यप्रवर के दांयीं ओर विराजमान हुए दिगम्बर आम्नाय के आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी, स्थानकवासी श्रमण संघ के उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी, स्थानकवासी श्रमणसंघ के उपप्रवर्तक विनयमुनिजी और उपप्रवर्तक गौतममुनिजी। पूज्यप्रवर के बांयीं ओर आसीन हुए मूर्तिपूजक संप्रदाय के आचार्यश्री रामसूरीश्वरजी (डेहलावाले) के शिष्य आचार्यश्री श्रीजगच्चन्द्रसूरिजी, आचार्यश्री कलापूर्णसूरीश्वरजी के शिष्य आचार्य तीर्थभद्रसूरीश्वरजी, आचार्यश्री जिनपूर्णानंदसूरीश्वरजी पन्यासश्री भाग्यचंद्रविजयजी।

संगोष्ठी का प्रारम्भ परम पूज्य आचार्यप्रवर के वक्तव्य से हुआ। आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'यह एक सुन्दर अवसर है कि जैन धर्म के चारों संप्रदायों के आचार्य, उपाध्याय आदि उपस्थित हुए हैं। जैन धर्म एक पवित्र धर्म शासन है, जहां वीतरागता की बात है। हमारा सौभाग्य है कि हमें जैन शासन में दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पूज्यप्रवर ने जैन महासंघ-चेन्नई की ओर से श्रावक समाज के लिए न्यूनतम आचार संहिता के रूप में प्रस्तावित इस संगोष्ठी में विचारणीय बिन्दुओं के संदर्भ में कहा--'आज यह संगीति हो रही है, अच्छा है, किन्तु ये जो बिन्दु हैं, वे नियम के रूप में होने चाहिए या प्रेरणा-परामर्श के रूप में? मेरी दृष्टि में कुछ बातें नियम का रूप न देकर परामर्श या प्रेरणा के रूप में बतानी चाहिए। जैसे-जैन समाज के लोग शराब, मांस व अंडा के सेवन से सर्वथा बचें। महावीर जयंती एक ही दिन मनाएं। ये दोनों बातें आज भी जैन समाज में काफी अंशों में चल भी रही हैं, इन पर और बल भी दिया जा सकता है।

आचार्यप्रवर के उद्‌बोधन के उपरान्त विचार-विमर्श का दौर शुरू हुआ। जिसमें अनेकानेक सुझाव

आए। प्रसंगवश मूर्तिपूजक आचार्य श्रीजगच्चन्दसूरीश्वरजी ने आचार्यश्री महाश्रमण से कहा--'आप के यहां नियम बनाना संभव है, हमारे यहां यह संभव नहीं है। क्योंकि आपके यहां एक नेतृत्व है, अनुशासन है।'

उनकी बात सुनकर श्रमण संघीय उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी बोले--'तेरापंथ में एकता है, इसलिए आचार्यश्री महाश्रमणजी कोई भी नियम बनाएं, उसे सभी मान लेंगे। यह स्थानकवासी और मूर्तिपूजक संप्रदाय में संभव नहीं।'

तदुपरान्त अन्य किसी प्रसंग में दिगम्बर आचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी ने कहा--'आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन शुरू किया, उससे जनता को बहुत फायदा हुआ और जैन धर्म को एक नई पहचान मिली। मैं आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी की पुस्तकें पढ़ता रहता हूं।'

मूर्तिपूजक आचार्यश्री तीर्थभद्रसूरीश्वरजी ने एक और प्रसंग में कहा--'मैंने कुछ जगह महाप्रज्ञ स्कूल देखी। उनमें अध्ययन और व्यवस्थाएं भी अच्छी हैं तथा वहां संस्कार भी अच्छे दिए जाते हैं। इसलिए वहां जैन समाज के बच्चे पढ़ते हैं। जैन समाज के अन्य विद्यालयों में भी ऐसा होना चाहिए।'

अन्य जैन संप्रदायों के आचार्यों आदि के मुख से तेरापंथ धर्मसंघ के लिए निकलने वाले ये श्लाघात्मक शब्द उपस्थित मुनिवृंद को और अधिक गौरवानुभूति करवा रहे थे।

तत्पश्चात् श्रावक समाज के सम्मुख आचार्यों आदि की संगीति के निष्कर्ष रूप में कुछ संकेत बिन्दु, जो प्रेरणात्मक थे, बताए गए। इस क्रम में सभी उपस्थित आचार्यों आदि के उद्बोधन हुए।

पूज्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में उन बिन्दुओं का स्पर्श करते हुए कहा--'जैन महासंघ के अनुरोध पर जैन शासन के विभिन्न आचार्यों, उपाध्याय आदि से मिलना हो गया, यह अच्छी बात है। कुछ चिन्तन-मंथन भी चला। जैन परंपरा में जन्मे, जैन धर्म से जुड़े हुए व्यक्ति के अण्डा, मांस, मछली और शराब मुंह के न लगे। यह संस्कार जैन समाज के युवकों और किशोरों में भी रहना चाहिए। होटल में जाएं, चाहे हॉस्टल में, देश में रहें या विदेश में, कहीं भी रहें, शराब, अंडा, मांस, मछली आदि का सेवन नहीं करना चाहिए। जैन समाज के परिवारों की शादियों में शराब होनी ही नहीं चाहिए। भ्रूणहत्या के रूप में भी पंचेन्द्रिय प्राणी की हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए। जैन समाज के विद्या संस्थानों में जैन धर्म का शिक्षण-प्रशिक्षण हो सके, वहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आएं, ऐसा यथासंभव प्रयास होना चाहिए। जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं को जैन तत्त्व विद्या को पढ़ने, जैन धर्म को पढ़ने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। जैन धर्म की जानकारियां जैन समाज की युवा पीढ़ी व किशोर पीढ़ी को भी प्राप्त हो, ऐसा प्रयत्न वांछनीय है। आज सबसे मिलना हो गया, अच्छा हुआ।'

पूज्यप्रवर के मंगलपाठ से संगीति और जनता के सम्मुख आयोजित कार्यक्रम परिसंपन्न हुए।

प्रखर आतप में भी वचननिष्ठ आचार्यप्रवर ने बरसाया अनुग्रह

पूज्यप्रवर लगभग १०.२७ बजे ए.एम.के.एम. मेमोरियल जैन सेंटर से प्रस्थान कर बाहर पधारे। आचार्यप्रवर का आज कई स्थानों पर पधारना पूर्व निर्धारित था। पूज्यप्रवर को निवेदन किया गया कि काफी विलम्ब हो गया है, अतः पूज्यप्रवर सीधे प्रवास स्थल में पधारने की कृपा करें। जहां-जहां आज पधारना निर्धारित है, वहां कल भी पधारना हो सकता है। कल उनके लिए आज से कम चक्कर लेने से भी काम हो जाएगा। आचार्यप्रवर ने इस निवेदन को स्वीकार नहीं किया और फरमाया--'जहां आज के लिए कहा हुआ है, वहां यथासंभव आज ही जाने का प्रयास करते हैं। वचननिष्ठ आचार्यप्रवर चिलचिलाती धूप में उन निर्धारित घरों आदि की ओर प्रस्थित हुए करीब सवा तीन किलोमीटर की अतिरिक्त दूरी (साढ़े चार कि.मी. संपूर्ण) तय कर निर्धारित स्थानों पर पधारे। इस क्रम में मुनि अनेकांतकुमारजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के

निवास स्थान के अपार्टमेंट में भी पधारना हुआ। आचार्यप्रवर प्रखर आतप में ११.५७ बजे प्रवचन पंडाल में पधारे और कुछ ही क्षणों में प्रवचन प्रारम्भ कर दिया।

चिलचिलाती धूप में महाश्रम के पर्याय महातपस्वी महाश्रमण का महानगर में परिभ्रमण

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने श्री मीठालाल बाफणा की भूमि में निर्मित प्रवचन पंडाल में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी को जीवन में अविनीतता, उद्दंडता से बचना चाहिए। धन, सत्ता, ज्ञान, रूप, तपस्या आदि का अहंकार नहीं करना चाहिए। जो विनीत होता है, उसका विकास होता है। विनीत सुखी और अविनीत दुःखी होता है। किसी की अवहेलना, आशातना नहीं करनी चाहिए।

मुमुक्षु बाइयां बैठी हैं। इनको अभी ज्ञान की आराधना करनी चाहिए, साधना करनी चाहिए और ज्ञान का कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। ज्ञान बढ़े, पर ज्ञान के साथ अहंकार नहीं बढ़ना चाहिए। ज्ञान के साथ विनय का विकास होता है तो ज्ञान शोभित होता है। ज्ञान के साथ अहंकार काम का नहीं होता। अन्य किसी बात का भी अहंकार नहीं करना चाहिए।

मुमुक्षु बाइयां तो अभी प्रशिक्षण काल में हैं। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रहते हुए अच्छे संस्कारों का निर्माण और विकास होना चाहिए। छोटी-छोटी बालिकाएं हैं, उनके सामने संभावित कितना लंबा भविष्य है। उनमें अच्छे ज्ञान, अच्छे संस्कारों और अच्छी साधना का विकास होना चाहिए। जिन्दगी में उद्दंडता कभी नहीं करनी चाहिए, अनुशासनहीनता कभी नहीं करनी चाहिए। गुरु के अनुशासन और इंगित में रहने का भाव रहना चाहिए। गुरु जो भी इंगित अथवा आदेश कर दे, उस पर ध्यान देकर उसे क्रियान्वित करने का प्रयास करना चाहिए। गुरु के वचन को पूरा करके उसे अमोघ बनाने का समुचित प्रयास करना चाहिए। जीवन में ऐसे अच्छे संस्कार आएंगे तो जीवन अच्छा बन सकेगा और आगे भी अच्छा हो सकेगा।'

प्रवचन के बाद भी परिश्रमयुक्त परिभ्रमण

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यप्रवर प्रवास स्थल पर नहीं पधारे। एक और पूर्व घोषित घर में आचार्यप्रवर का पधारना अवशिष्ट था। आचार्यप्रवर ने वहां पधारने से पूर्व करीब पौन कि.मी. दूर स्थित अमृत हॉस्पिटल में पधारकर साध्वीवर्याजी को दर्शन दिए और वहां कुछ क्षण आसीन होकर उन्हें उपासना करवाई। पूज्यप्रवर के परिश्रमयुक्त अनुग्रह वृष्टि में अभिस्नात साध्वीवर्याजी गुरुदर्शन कर तो आह्लादित थीं, किन्तु प्रखर धूप में आचार्यप्रवर द्वारा किया गया श्रम उन्हें भी अखर रहा था। उन्होंने आचार्यप्रवर से इस संदर्भ में निवेदन भी किया, किन्तु पूज्यप्रवर की मुस्कान में ही वह समाहित हो गया।

तदुपरान्त आचार्यप्रवर करीब एक कि.मी. की अतिरिक्त यात्रा कर साध्वी तितिक्षाश्रीजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान में पधारे। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आज स्पर्शनीय घरों में यह अंतिम था। इसके बाद पूज्यप्रवर करीब १.१७ बजे आज के प्रवास स्थल श्री प्यारेलाल पितलिया परिवार के निवास स्थान में पधारे। अपने आंगन में अपने गुरु को पाकर पितलिया परिवार भावविभोर बना हुआ था।

तेरापंथ जैन विद्यालय में तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता

२० जुलाई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः किल्पॉक से पट्टालम् की ओर प्रस्थान किया। आचार्यप्रवर कुछ अतिरिक्त दूरी तय कर श्री पुखराज परमार के निवास स्थान में पधारे और वहां विराजमान होकर उन्हें उपासना का अवसर प्रदान किया। पूज्यप्रवर ने श्री परमार को पावन प्रेरणा भी प्रदान की।

तदुपरान्त आचार्यप्रवर साध्वीवर्याजी को दर्शन देने अमृत हॉस्पिटल में पधारे। बार-बार गुरुकृपा वृष्टि

में अभिस्नात होने वाली साध्वीवर्याजी श्रीचरणों में बार-बार अपने कृतज्ञभाव अर्पित कर रही थीं। आचार्यप्रवर अमृत हॉस्पिटल से प्रस्थान कर चूलै में स्थित श्री जैनसुख दुगड़ परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का प्रातराश यहीं हुआ। पूज्यप्रवर के स्वल्प प्रवास से भी दुगड़ परिवार का उल्लास चरम पर था। आचार्यप्रवर पट्टालम् की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में अनेक लोगों ने अपने-अपने घरों आदि के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण किया। संबंधित लोगों की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर शांतिनाथ जैन उपाश्रय में भी पधारे। पूज्यप्रवर का पट्टालम् पदार्पण स्थानीय श्रद्धालुओं को हर्षविभोर बनाए हुए था। आचार्यप्रवर के स्वागत में तेरापंथ समाज एवं अन्य जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में खड़े थे।

आचार्यप्रवर मुख्य प्रवचन कार्यक्रम हेतु तेरापंथ एजुकेशनल एंड मेडिकल ट्रस्ट चेन्नई द्वारा संचालित तथा पट्टालम् स्थित तेरापंथ जैन विद्यालय में पधारे। विद्यालय के विद्यार्थियों आदि ने तथा पट्टालम् के उल्लसित श्रद्धालुओं ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम इसी विद्यालय में आयोजित हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा-- 'विद्यालय में विद्यार्थी पढ़ते हैं। वे अध्यापकों के सम्पर्क में रहते हैं, ज्ञान प्राप्त करते हैं। भूगोल, खगोल, विज्ञान, गणित आदि विषयों का ज्ञान पाना भी एक उपलब्धि होती है। इसके साथ-साथ कुछ आध्यात्मिक ज्ञान और जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण भी विद्यार्थियों को मिलता रहे।

जैन तेरापंथ से जुड़े हुए विद्यालय में जैन धर्म का भी शिक्षण-प्रशिक्षण होता रहे। यदा-कदा विशेष अवसरों पर विद्यार्थियों को जैन धर्म की बातें जानने को मिलें। उनके संस्कार अच्छे बने रहें। विद्यार्थी जैन/अजैन कोई भी हो, विद्यालय जैन/अजैन कोई भी हो, संस्कारी और ज्ञानवान विद्यार्थियों का निर्माण होना चाहिए। विद्यार्थी ज्ञान की दृष्टि से सक्षम व योग्य हों और साथ में संस्कारों की दृष्टि से भी योग्य व सक्षम हों तो जीवन का संतुलित विकास हो सकता है।

जो विद्यालय जैन समाज, तेरापंथ समाज के आधिपत्य में हो, नेतृत्व में हों, प्रशासकत्व और प्रबन्धकत्व में हों, उन विद्यालयों में तो विशेष रूप से ध्यान देना ही चाहिए कि उन विद्यालयों के विद्यार्थी जैन तेरापंथ की दृष्टि से भी कुछ जानकार बनें और मुख्य बात है कि संस्कार संपन्न बन जाएं। लोग यह आशा करें कि ये विद्यार्थी जैन तेरापंथ विद्यालय में पढ़े हुए हैं तो इनमें अच्छे संस्कार होने चाहिए।

विद्यालय में ज्ञानदान होता है, यह अच्छा कार्य है। शिक्षक पुस्तकों से भी ज्ञान दें और अपने जीवन के व्यवहारों से भी ज्ञान दें। उनकी जीवन की पोथी भी विद्यार्थियों को ज्ञान देती रहे। जीवन खुद संदेश बन जाए तो और ज्यादा महत्त्व की बात हो जाती है।

भारत में अध्यात्म की संपदा है। इस देश की बालपीढ़ी अच्छी तैयार होनी चाहिए। विद्यार्थी भारत की अध्यात्म संपदा से परिचित हों और अपने जीवन में उसके रसास्वादन का प्रयास करें तो यह राष्ट्र के लिए भी अच्छी बात हो सकती है। विद्यालय प्रबन्धन, अभिभावकों और स्वयं विद्यार्थियों के लिए भी यह अच्छी बात हो सकती है।

चेन्नई में चारित्रात्माओं का प्रायः चतुर्मास होता है। शेषकाल में भी प्रवास होता होगा। जब भी मौका मिले तो इस विद्यालय में उनका भी प्रवचन होना चाहिए। त्यागी व्यक्तियों के मुख से कुछ सुनने को मिले तो उसका कुछ विशेष असर हो सकता है। साधु-साध्वियों को इस हेतु निवेदन भी किया जा सकता है।'

तेरापंथ समाज-पट्टालम् की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ जैन विद्यालय के संवाददाता श्री सूरज धोका और विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती आशा कृष्टि ने आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में अपने आस्थासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी। संसारपक्ष में पट्टालम् से संबंधित साध्वी ऋद्धियशाजी ने

आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने भावसुमन अर्पित किए। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यप्रवर प्रवास स्थल की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में साध्वी ऋद्धियशाजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान में पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। आचार्यप्रवर ने कुछ अक्षम श्रद्धालुओं को उनके घर पधारकर दर्शन दिए, उनमें एक थी--समाज भूषण श्री जसवंतमल सेठिया की धर्मपत्नी। पूज्यप्रवर ने सेठिया परिवार के निवास स्थान में कुछ क्षण आसीन होकर श्राविकाजी को उपासना का अवसर भी प्रदान किया।

आचार्यप्रवर प्रातः से कुल ४.७ कि.मी. का विहार कर पट्टालम् में ही स्थित श्री तनसुख नाहर परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य को अपने आंगन में देखकर नाहर परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

सायंकाल करीब ५.०० बजे आचार्यप्रवर पट्टालम से एम.के.बी. व्यासरपाड़ी की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में यत्र-तत्र दर्शनार्थ खड़े अनेकानेक लोगों ने अपने-अपने घरों आदि के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। आचार्यप्रवर एम.के.बी. नगर में स्थित स्थानकवासी समाज के अनुरोध पर जैन स्थानक में पधारे। वहां प्रवासित स्थानकवासी समाज की साध्वी धर्मप्रभाजी आदि ठाणा-२ ने पूज्यप्रवर की अगवानी करते हुए पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता अर्पित की। पूज्यप्रवर वहां से प्रस्थान कर एम. के.बी. नगर व्यासरपाड़ी में पधारे। यहां एक अक्षम श्रद्धालु को उसके घर में पधारकर दर्शन दिए। आचार्यप्रवर के स्वागत में व्यासरपाड़ी और उसके आसपास में प्रवास करने वाले तेरापंथ समाज और अन्य जैन समाज का उल्लास चरम पर था। लोगों की प्रसन्न मुखाकृति पर उनका आंतरिक उल्लास मुखर बना हुआ था। कुल ४.१ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर विवेकानंद विद्यालय जूनियर कॉलेज में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी अन्य जैन समाज के लोगों की उपस्थिति अच्छी संख्या में रही।

आधी सदी बाद पुनः फली मद्रास (चेन्नई) की आस

प्रलम्ब दुष्कर यात्रा परिसम्पन्न कर परम पूज्यप्रवर का भव्य मंगल चातुर्मासिक प्रवेश

२१ जुलाई। यह सपना है या सच कि पश्चिम से चला एक महासूर्य अपनी ज्योतिर्मय किरणों से उत्तर और पूर्व को ज्योतित करने के उपरान्त दक्षिण को आलोकित करने पहुंच गया है। यह सपना है या सच कि एक व्यक्तित्व करीब सात वर्ष भारत के सुदूर प्रान्तों की यात्रा का सपना संजोकर हजारों किलोमीटर पैदल चलते हुए उस सपने के एक और पड़ाव को प्राप्त कर चुका है। यह सपना है या सच कि नक्सली क्षेत्रों की यात्रा करता हुआ एक कारवां अपने कुशल सार्थवाह के नेतृत्व में कदम दर कदम बढ़ता हुआ सकुशल एक और मुकाम पर पहुंच गया है। यह सपना है या सच कि एक अत्यंत नाजुक और कोमल तन वाले महाराज पांव-पांव, गांव-गांव पैदल चलकर अनगिन कष्टों को सहते हुए प्रचंड आतप की परवाह किए बिना जन-जन का आतप हरते हुए तमिलनाडु की राजधानी में पहुंच गए हैं। यह सपना है या सच कि भाषागत कठिनाइयों के बावजूद एक अंतर्यामी महापुरुष जनता के दिली भावों को समझता हुआ उन्हें अपने त्याग-तपोमय जीवन से उत्प्रेरित करता हुआ भाषायी कट्टरता के लिए विख्यात प्रदेश में पहुंच गया है। यह सपना है या सच कि तीन सागरों की मिलन भूमि (तमिलनाडु) में करुणा का महासागर लहरा उठा है। यह सपना है या सच कि आधी सदी बाद फिर एक युगपुरुष अपने युगीन और क्रान्त चिंतन से युग को झकझोरता हुआ सुपावन चरणों से मानों संपूर्ण भारत को जोड़ते हुए दक्षिणी छोर पर पहुंच गया है। यह सपना है या सच कि स्वयं भगवान अपने भावाभिभूत भक्तों के बीच उतर आया है।

इन प्रश्नों के उत्तर पाने हेतु आज हर एक जिज्ञासु हृदय समुत्सुक था या फिर यों कहें सच होते हुए भी सब कुछ इतना आश्चर्यकारी था कि पहली बार सुनने-जानने वाला व्यक्ति तो विश्वास ही नहीं कर पा रहा था और अन्य लोग भी दांतों तले अंगुली दबा रहे थे। अपने गुरुद्वय ही नहीं, अपने हर भक्त के सपने को साकार करने वाले तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यप्रवर भी दक्षिण में रहने वाले अपने श्रद्धाभिभूत भक्तों के सपनों को भला अधूरा कैसे रहने देते। इसीलिए धर्मसंघ की बागडोर संभालने के कुछ ही समय पश्चात् उन्होंने अपने भक्तों के सपनों को अपना सपना बनाया और फिर उसे संकल्प का रूप दिया और तदुनुरूप संकल्प की क्रियान्विति करते हुए आज मद्रास (चेन्नई) निवासी भक्तों को ऐसी सौगात दे दी, जिससे उनकी आने वाली कई पीढ़ियां भी लाभान्वित होती रहेंगी।

सपना संजोने से उसके सच होने तक की कहानी बड़ी दिलचस्प है। न जाने कितने-कितने कष्ट आए, विघ्न-बाधाएं आईं, कितनी चेतावनियां दी गईं, सफलता की प्राप्ति में कितनी संदेहात्मक भविष्यवाणियां भी की गईं, किन्तु फौलादी संकल्पों के धनी प्रबल आत्मबली आचार्यश्री महाश्रमण ने सारी आशंकाओं, अवरोधों और आपदाओं को अपने सुकोमल चरणों से रौंदकर अपने भक्तों के लिए संजोए अपने सपने को साकार कर दिखाया।

यों तो कोलकाता से चेन्नई तक की दूरी करीब १५६८ कि.मी. है, किन्तु श्रद्धालुओं की भरपूर भक्ति और आचार्यप्रवर की भक्त वत्सलता के कारण यह दूरी हजार कि.मी. से भी ज्यादा बढ़ गई। (कुल २६१५ कि.मी.) इस प्रलम्ब यात्रा में प्रतिकूलताएं और अनुकूलताएं दोनों ही प्रचुर मात्रा में मिलीं। झारखण्ड और ओड़िशा के नक्सली क्षेत्रों की यात्रा हो या स्थानगत कठिनाई, हर मिनट पसीने से नहलाने वाली प्रचंड गर्मी के मौसम में आंध्रप्रदेश की यात्रा हो या तूफान से युक्त मूसलाधार बारिश के बीच यात्रा, मच्छरों के तीखे दंश हों या बीहड़ जंगल में हिंस्र प्राणियों का खतरा, सभी प्रतिकूलताओं के बीच आचार्यप्रवर की मुस्कान यथावत बरकरार रही। दूसरी ओर आचार्यप्रवर के त्याग-तपोमय करिश्माई व्यक्तित्व के कारण अनुकूलता भी भरपूर थी। चाहे राजकीय सम्मान हो या जैन-जैनेतर लोगों का प्रचुर भक्तियुक्त दिवानापन, प्रखर आतप को रोकने के लिए प्रचंड गर्मी के मौसम में भी प्रतिदिन सघन बादलों का आवागमन हो या गर्म हवा बहने के स्थानों में शीतल समीर का बहाव, जंगल में भी दर्शनार्थियों की लंबी कतार हो या सेवार्थियों की भरमार, उच्च पदस्थ और प्रबुद्ध व्यक्तियों का अहिंसा यात्रा को सश्रद्धा समर्थन हो या हर जाति, वर्ग, क्षेत्र, संप्रदाय की जनता द्वारा अहिंसा यात्रा के संकल्पों का स्वीकरण, युवावर्ग का सघन जुड़ाव हो या बालपीढ़ी का बढ़ता रुझान, स्वागत में उमड़ा जन सैलाब या जनाकीर्ण बने विशाल प्रवचन पंडाल, सभी अनुकूलताएं भी वीतराग कल्प आचार्यप्रवर के समत्व भाव को नहीं हिला पाईं। प्रतिकूलताएं ज्योतिचरण के चरणकमलों को डिगा नहीं पाईं तो अनुकूलताएं उन्हें रोक भी नहीं पाईं। एक दिन में २१ से अधिक किलोमीटर विहार कर भी आचार्यप्रवर थके नहीं और एक दिन में चार-चार विहार और छह-छह प्रवचन करने के बाद भी रुके नहीं। 'चरैवेति-चरैवेति' इस सूक्त को चरितार्थ करते हुए आचार्यप्रवर निरंतर गति करते रहे।

इसीलिए ही आज का यह सुअवसर आया, जब तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता शांतिदूत महातपस्वी आचार्यप्रवर ने चेन्नई चतुर्मास के लिए भव्य व मंगल चातुर्मासिक प्रवेश किया। इस प्रवेश हेतु परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः एम.के.बी. व्यासरपाड़ी से माधावरम् की ओर प्रस्थान किया। चेन्नई महानगर के हजारों लोग आज अलसुबह ही आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच चुके थे। लोगों के आने का क्रम निरंतर जारी था। चारों ओर प्रसन्नता और उल्लास का वातावरण छाया हुआ था। समुद्र के पानी में नदियों के पानी को पृथक्-पृथक् कर देखना जिस तरह दुष्कर कार्य होता है, उसी प्रकार दुष्कर था पूज्यप्रवर के स्वागत में उमड़े जनसैलाब में तेरापंथ व अन्य जैन समाज का भेद करना। हर तरफ श्रद्धा-भक्ति की लहरें

हिलोरे ले रही थीं। लोगों की आने की दिशाएं और पथ भले भिन्न-भिन्न हों, उनका उद्देश्य और गंतव्य एक ही था। इसीलिए पूज्यप्रवर चारों ओर से भक्तिरस में सराबोर भक्तों से आवृत थे। 'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण' यह उद्घोष सबमें अतिरिक्त उत्साह का संचार करता-सा नजर आ रहा था। यही कारण था कि जब भी यह घोष उद्घोषित हो रहा था, आसपास का पूरा वातावरण गुंजायमान हो रहा था। पांच दशकों बाद अपने आराध्य को पावन चातुर्मासिक प्रवेश करते हुए देखकर श्रद्धालुओं के चेहरों पर उमड़े हुए भावों को देखकर ऐसा लग रहा था मानों वर्षों से प्यासे मनुज को ठंडा मीठा जल मिल गया हो, अपने तेरापंथी होने की गर्वानुभूति को और अधिक बल मिल गया हो तथा अपने जीवन का सबसे सुन्दर पल मिल गया हो।

हजारों लोगों की उपस्थिति से राजमार्ग महाश्रमणमय बना हुआ था। दूर-दूर तक जनता ही जनता दृष्टिगोचर हो रही थी। भारी भीड़ के बीच गतिमान परमाराध्य आचार्यप्रवर सबके आकर्षण के केन्द्र बने हुए थे। हर आंख आचार्यप्रवर के दर्शन को बेताब थी, हर मस्तक पूज्यचरणों में प्रणत होने को उत्सुक था। हर हृदय में श्रद्धाभावों का ज्वार उमड़ रहा था और हर हाथ महातपस्वी को वंदन कर धन्यता की अनुभूति कर रहा था। आसमान में छाए हुए बादलों के कारण मौसम सुहावना बना हुआ था। यदा-कदा हल्के जलकण भी बरस रहे थे, मानों प्रकृति प्रलंब यात्रा करने वाले महातपस्वी आचार्यप्रवर का अभिषेक कर रही थीं, अभिनन्दन कर रही थीं।

सेंट ऐनी गर्ल्स हाइस्कूल से प्रारम्भ हुए भव्य स्वागत जुलूस में लोगों की विशाल उपस्थिति के कारण राजमार्ग भी छोटा दिखने लगा और यातायात में जाम की स्थिति बन गई। इस कारण जुलूस के क्रम में भी कुछ व्यवधान हुआ। भव्य स्वागत जुलूस में जैन ध्वज के पीछे कतारबद्ध मुमुक्षु बहनें व समणियां गति कर रही थीं। उनके पीछे महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों की कतार गतिमान थी।

धीर-गंभीर कदमों से गतिमान आचार्यप्रवर अपने करकमल से श्रद्धालुओं पर आशीषवृष्टि कर रहे थे। कतारबद्ध साधु समुदाय पूज्य पदचिन्हों का अनुगमन कर रहा था। उसके पीछे आस्था भावों से ओतप्रोत विशाल जनमेदिनी गतिमान थी। लोगों के खिले-खिले चेहरे उनकी आंतरिक प्रसन्नता को स्पष्ट दर्शा रहे थे। बुलंद जयघोषों से वातावरण गुंजायमान बना हुआ था। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी विभिन्न झांकियों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दे रहे थे।

पूज्यप्रवर विशाल जनमेदिनी के साथ आवास कार्यालय के निकट पधारे। प्रवास व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर आचार्यप्रवर आवास कार्यालय में पधारे और वहां उन्हें मंगलपाठ सुनाया। तदुपरान्त आचार्यप्रवर चातुर्मासिक प्रवास स्थल के निकट पधारे। पूज्यप्रवर ज्योंही उसके सम्मुख खड़े हुए हल्की बूंदाबांदी भी शुरू हो गई।

खुशनुमा मौसम और माहौल में करीब ८.११ बजे परम पूज्य आचार्यप्रवर ने तेरापंथ वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा निर्मित आचार्य महाश्रमण जैन तेरापंथ विद्यालय में चातुर्मासिक प्रवास की दृष्टि से पावन प्रवेश किया।

आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर विद्यालय के आचार्य भिक्षु परिसर का श्री प्यारेलाल पितलिया भगवान महावीर ब्लॉक का श्रीमती केशरबाई आच्छा, आचार्य तुलसी ब्लॉक का श्री प्रकाश मूथा, आचार्य महाप्रज्ञ ब्लॉक का श्री जुगराज नाहर, आचार्य महाश्रमण सभागार का श्री छत्रमल बैद और आचार्य भिक्षु सभागार का श्री जयंतीलाल सुराणा ने लोकार्पण किया। पूज्यप्रवर आचार्य महाश्रमण सभागार में स्थित अपने प्रवास कक्ष में पधारे। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर को सविधि वंदन किया। आचार्यप्रवर ने गीतों के द्वारा आचार्यश्री भिक्षु, गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का पावन स्मरण किया। पूज्यप्रवर ने मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' की भी स्मृति की। आचार्यप्रवर ने तेरापंथ वेलफेयर ट्रस्ट के चेयरमेन श्री देवराज आच्छा तथा आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री

धर्मचंद लूंकड़ से स्थान, पट्ट आदि की अनुमति प्राप्त की।

लगभग ८.२१ बजे पूज्यप्रवर प्रवास कक्ष में आसीन हुए। तदुपरान्त आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार साध्वीप्रमुखाजी ने मंगलपाठ उच्चरित किया। इस दौरान पूज्यप्रवर भी अपने स्थान पर खड़े रहे। साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया--'चतुर्मासकाल में पूज्यप्रवर का स्वास्थ्य निरामय रहे। आपसे हमें और जनता को खूब आध्यात्मिक पोषण प्राप्त हो।' पूज्यप्रवर ने साध्वियों और समणियों के निवेदन पर उन्हें मंगलपाठ सुनाया। आचार्यप्रवर कुछ समय पश्चात् साध्वीवृंद के प्रवास स्थल पर पधारे। वहां साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया--'आचार्यप्रवर ने यहां पधारकर बड़ी कृपा की। मुझे यहां मंगलपाठ सुनाने की कृपा कराएं।' आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया। इस प्रकार परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा दक्षिण प्रदेश के लिए घोषित तीन चतुर्मासों में से प्रथम चातुर्मासिक प्रवेश भव्य, मंगल और सानंद रूप में हुआ।

महाश्रमण समवसरण में आचार्यश्री महाश्रमण की देशना सुनने उमड़े श्रद्धालु

विशाल महाश्रमण समवसरण में परम पूज्य आचार्यप्रवर के पावन प्रवेश के साथ ही पूरा पंडाल 'वन्दे गुरुवरम्' तुमुलनाद से गुंजायमान हो उठा। आचार्यप्रवर ने मंचासीन होकर विशाल जनमेदिनी पर आशीषवृष्टि की।

कार्यक्रम का प्रारम्भ परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल-चेन्नई ने स्वागत गीत का संगान किया। आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-चेन्नई के अध्यक्ष श्री धर्मचन्द लूंकड़, स्वागताध्यक्ष श्री प्यारेलाल पितलिया, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष श्री दिनेश धोका, तेरापंथ वेलफेयर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री देवराज आच्छा और श्री अशोक खतंग ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त भावों को प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद-चेन्नई, जय तुलसी संगीत मंडल और तेरापंथ कन्या मंडल ने पृथक्-पृथक् गीतों के द्वारा पूज्यप्रवर के चरणकमल में अपनी विनयांजलि अर्पित की। उपासक श्रेणी के चेन्नई निवासी सदस्यों ने गीत को प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। तेरापंथ किशोर मंडल ने परिसंवाद के माध्यम से आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की। साध्वी प्रियवंदाजी ने आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

इतिहास का पुनरावर्तनः आचार्यप्रवर के स्वागत में सश्रद्धा उपस्थित हुए तमिल के मुख्यमंत्री

कार्यक्रम के दौरान तमिलनाडु के मुख्यमंत्री श्री एडप्पाडी के. पलनीसामी पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने आते ही पूज्यप्रवर को सभक्ति वन्दन किया। उनके साथ समागत तमिलनाडु के लघु उद्योग मंत्री श्री बेंजामिन, पूर्व मंत्री श्री ए.के. मूर्ति, विधायक श्री वी. एलेक्जेंडर, श्री के.एस. विजयकुमार, श्री पी. बलरामन, श्री पी.एस. नरसिंहमन तथा श्री आर. कुमारगुरु ने भी पूज्यप्रवर को नमन किया। तमिलनाडु के प्रिंसपल सेकेट्री श्री सेन्थिल कुमार (आई.पी.एस.), तरुवल्लूर जिला कलेक्टर श्री के. सुन्दरवल्ली (आई.ए.एस.) तथा चेन्नई नॉर्थ क्षेत्र के एडिशनल पुलिस कमिश्नर श्री जयराम भी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर के स्वागत में मुख्यमंत्रीजी के समागमन से मानों ५० वर्ष पूर्व के इतिहास का पुनरावर्तन हो गया। सन् १९६८ में मद्रास (चेन्नई) में आचार्य तुलसी के स्वागत में तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अन्नादुरै इसी प्रकार उपस्थित हुए थे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।।

आदमी के मन में मंगल की चाह रहती है। वह कोई विशेष कार्य शुरू करता है तो उसकी निर्विघ्नता की कामना मन में रहती है। मंगल के लिए मनुष्य प्रयास भी करता है। दुनिया में उत्कृष्ट मंगल धर्म है। जहां धर्म है, वहां मंगल है। अहिंसा, संयम और तपस्या धर्म है। जिस आदमी का मन सदा धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। अहिंसा के लिए कहा गया--'अहिंसा परमो धम्मो'। अहिंसा परम धर्म है। वह भगवती है, मां है, जो संरक्षण करने वाली है।

अहिंसा अमृत है और हिंसा जहर है। जहां अहिंसा है, वहां शांति है। जहां हिंसा है, वहां अशांति पनप सकती है। अहिंसा के संदर्भ में कहा गया--'आयतुले पयासु' सभी प्राणियों को अपने समान समझो। तुम्हें दुःख अप्रिय है तो दूसरे प्राणियों को भी दुःख अप्रिय है और तुम्हें सुख प्रिय है तो दूसरे प्राणियों को भी सुख प्रिय है। इसलिए दूसरों को दुःखी बनाने का व्यर्थ प्रयास मत करो।

साहित्य में कहा गया--

जं इच्छति अप्पणतो, जं च ण इच्छति अप्पणतो,
तं इच्छ परस्सविया, एत्तियगं जिणसासणं।'

जो तुम अपने लिए चाहो, वह दूसरों के लिए चाहो। जो तुम अपने लिए नहीं चाहते, दूसरों के लिए भी उसकी इच्छा मत करो।

हम लोग अभी अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। ९ नवम्बर २०१४ को दिल्ली से इस अहिंसा यात्रा का प्रारम्भ किया। इसके अंतर्गत नेपाल, भूटान और भारत के विभिन्न राज्यों में होते हुए चेन्नई पहुंचे हैं। मुझे जानकारी है कि परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने सन् १९६८ का चतुर्मास मद्रास (चेन्नई) में किया था। आज पचास वर्ष बाद अर्थात् आधी शताब्दी के बाद हम उन्हीं के शिष्य चेन्नई में चतुर्मास करने के लिए आए हैं। मानों की उनका अनुगमन करते हुए पचास वर्षों के बाद चेन्नई में चतुर्मास करने के लिए आए हैं।

अहिंसा यात्रा में तीन बातों का प्रचार किया जा रहा है--सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। सद्भावना अर्थात् जाति, संप्रदाय आदि को लेकर दंगा-फसाद, हिंसा-हत्या, मारकाट में भागीदार नहीं बनना, मैत्री भाव रखना। नैतिकता--आदमी जो भी कार्य करे, उसमें ईमानदारी रखना। नशामुक्ति--शराब, बीड़ी, सिगरेट आदि नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना। इनके तीन संकल्प हैं। (पूज्यप्रवर ने तीनों संकल्पों की भाषा बताकर चेन्नईवासियों से इन्हें स्वीकार करने का आह्वान किया तो समुपस्थित हजारों लोग खड़े हो गए और पूज्यप्रवर से कृत संकल्प बने।) अहिंसा यात्रा में इन तीनों का प्रसार कर लोगों को प्रतिज्ञाएं करवाई जा रही हैं। ये तीन चीजें जीवन में रहें तो जीवन अच्छा रह सकता है।

आदमी को अपने शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों का संयम रखना चाहिए। संयम जीवन में है तो मानों जीवन में मंगल है।

आदमी के जीवन में तपस्या भी रहनी चाहिए। तपस्या के कुल बारह प्रकार हैं, उनकी आराधना करनी चाहिए। तपस्या भी मंगल है। चेन्नई में चातुर्मासिक प्रवास होने जा रहा है। हम जैन साधु चार माह तक प्रवास एक ही क्षेत्र में करते हैं। शेष आठ माह में भ्रमण कर सकते हैं। भ्रमण करते-करते आज माधावरम में चतुर्मास करने के लिए आए हैं। यह चतुर्मास खूब धर्मोद्योतकारी बने, यह अभिलाषा है।

आज के चातुर्मासिक प्रवेश और स्वागत समारोह के प्रसंग में तमिलनाडु के मुख्यमंत्रीजी पहुंचे हैं। यह अच्छी बात है। तमिलनाडु में खूब आध्यात्मिकता, धार्मिकता रहे। तमिलनाडु के लोगों में नशे की अल्पता आए। यहां की जनता में परस्पर सद्भावना और लेन-देन आदि व्यवहार में ईमानदारी रहे। ईमानदारी होती है तो शांति रहती है, निर्मलता भी रहती है। प्रान्त के विकास के लिए भौतिक विकास आवश्यक होता है। उसके लिए आर्थिक विकास भी अपेक्षित होता है। इन दोनों विकासों के अतिरिक्त नैतिकता और आध्यात्मिकता का विकास भी प्रान्त

में रहे। तमिलनाडु आध्यात्मिक, धार्मिक दृष्टि से खूब उन्नतिमान प्रदेश रहे।

आज चातुर्मासिक प्रवेश का मंगल अवसर है। हमारे काफी संत साथ में हैं। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी भी साथ पधारी हैं। आप पचास वर्ष पहले गुरुदेव तुलसी के साथ भी पधारी थीं। आज मानों पुनरावर्तन करते हुए पुनः हमारे साथ पधारी हैं और भी बहुत-सी साध्वियां, समणियां, मुमुक्षु बाइयां भी साथ हैं। चेन्नई चतुर्मास में खूब अच्छा कार्य चले। सब मंगलमय हो, मंगलकामना।

हमारे प्रथम आचार्य भिक्षु स्वामी, उनकी आचार्य परंपरा, गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी का भी समुचित रूप में हम सब पर कृववर्षण होता रहे।'

जनकल्याण के लिए समर्पित है आचार्यश्री का पूरा जीवन : मुख्यमंत्री, तमिलनाडु

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एडप्पाडी के. पलनीसामी ने कहा--'मैं सर्वप्रथम इस महाकुंभ के समान उपस्थित जनसमुदाय के बीच विशाल साधु समुदाय के साथ पधारे महातपस्वी राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाश्रमणजी को हृदय से वन्दन करता हूं। यदि पूरे भारत को एक मंदिर माना जाए तो तमिलनाडु उसका गर्भगृह है। भारत में जितनी भी दिव्यात्माओं ने जन्म लिया है, वे एक बार तमिलनाडु की धरा पर अवश्य पधारी हैं। यह तमिलनाडु की धरा का सौभाग्य है कि यह अनादिकाल से दिव्यात्माओं के चरणरज से पावन होती रही है। आज आचार्यश्री महाश्रमणजी सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संदेश के साथ तमिलनाडु की धरती पर पधारे हैं। मैं समस्त तमिलनाडु की जनता की ओर से आपका हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करता हूं और ऐसा करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

पचास साल पूर्व जब आचार्यश्री तुलसी विश्वशांति के लिए तमिलनाडु आए, उस समय हमारी पार्टी के मूल नायक कहे जाने वाले व तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. सी.एन. अन्नादुरै ने उनका स्वागत युनिवर्सिटि ऑफ मद्रास के सेनेटरी हॉल में किया था। आज उसका पुनरावर्तन करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है कि हमारी पार्टी के क्रांतिकारी नेता एमजी रामचन्द्रन व अम्मा डॉ. जयललिता की यह सरकार आपको भी विशिष्ट राजकीय अतिथि घोषित कर गौरव का अनुभव कर रही है। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि आप लगभग एक साल तक तमिलनाडु के कोने-कोने में जाकर सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश हमारी जनता को देंगे। इससे हमारी जनता को आध्यात्मिक लाभ मिलेगा।

आपकी इस यात्रा की सफलता हेतु हमारी सरकार का हर संभव सहयोग सदैव उपलब्ध रहेगा। इस यात्रा के तीनों उद्देश्य न केवल प्रशंसनीय हैं, अपितु समय की मांग भी हैं। इन उद्देश्यों के साथ चलने वाली अहिंसा यात्रा से स्वस्थ समाज का निर्माण अवश्य होगा, यह मेरा विश्वास है। मैं अहिंसा यात्रा की सफलता के लिए प्रार्थना करता हूं।

गुरु की महिमा का गुणगान तो सभी धर्मों ने किया है। आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन, प्रवचन श्रवण के बाद मन उसी प्रकार स्थिर हो गया है, जैसे गुरु का नाम जपने, दर्शन करने और उनका ध्यान करने से मिलता है। आचार्यश्री में धर्म के साथ-साथ समाज उत्थान और राष्ट्र कल्याण की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। आचार्यश्री ने अपना पूरा जीवन जनकल्याण के लिए समर्पित कर दिया है। गुरु का स्थान भगवान से भी ऊंचा होता है और भगवान को प्रणाम करने से पहले गुरु चरणों की वंदना की जाती है। आज हमारे बीच महातपस्वी गुरु आचार्यश्री महाश्रमणजी विराजमान हैं, यह हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है। मैं उनके चरणों में वंदन करता हूं।

दुनिया में सभी धन, संपदा आदि नष्ट होने वाले हैं। केवल धर्म और आपसी प्रेम ही रहने वाला है। आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी मंगलवाणी से हम सभी को धर्म और आपसी प्रेम का पाठ पढ़ा रहे हैं। बढ़ती

हिंसा और अन्य भौतिक बुराइयों से हम सभी को बचाने के लिए आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने शिष्यों के साथ तमिलनाडु की धरती पर पधारे हैं। विदेशों में लोग भौतिक सुख भले प्राप्त कर लें, धन ज्यादा कमा लें लेकिन उनके मन में शांति नहीं होती। क्योंकि उनके यहां आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान ज्ञानी संत नहीं होते, जो उन्हें सद्भावना, प्रेम व शांति का ज्ञान दे सकें। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसे महान संत प्राप्त हैं। संतों की वाणी से लोगों का हृदय परिवर्तन हो सकता है। मेरा मानना है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी की वाणी से भी लोगों का हृदय परिवर्तन अवश्य होगा और लोग बुराइयों को छोड़ सन्मार्ग पर चल सकेंगे। मैं ऐसे महातपस्वी, महाज्ञानी संत आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में उपस्थित हो स्वयं को बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।'

चेन्नई में उतरा है सहस्र किरणों का पुंज महासूर्य

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर ने तीन वर्ष पहले दक्षिण यात्रा की घोषणा की और उस घोषणा के अनुसार अपने निर्धारित कार्यक्रमों को पूरा करते हुए, पांव-पांव चलकर गांवों, नगरों, महानगरों में अध्यात्म का आलोक बरसाते हुए आचार्यश्री तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में पहुंच गए। लोगों को आश्चर्य होता है कि इतने पहले से निर्धारित कार्यक्रम यथावत कैसे पूरा हो सकता है? लेकिन हम जानते हैं कि कोई भी पवित्र चेतना वाला व्यक्तित्व अपनी संपूर्ण प्रबलता से कोई निश्चय करता है तो उससे पैदा होने वाली तरंगे प्रकृति में अपना प्रभावकारी हस्तक्षेप करके तत्कालीन परिस्थितियों को उस निश्चय के अनुरूप ढाल देती हैं, ताकि कार्य में किसी प्रकार का व्यवधान न हो।

जब कोई व्यक्ति सार्वजनिक हित की प्रेरणा से प्रेरित होकर निःस्वार्थ भाव से किसी कार्य में लगता है तो ब्रह्मांड का एक-एक कण उसकी मदद करता है। परम पूज्य आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा में कई बार इसे साक्षात् देखा। जब भी कोई परिस्थिति प्रतिकूल लगती, वह अनुकूल बन जाती। ब्रह्मांड के एक-एक कण ने इतना सहयोग किया कि आचार्यप्रवर अपने निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार यहां पधार गए। यह भी आश्चर्य होता है कि आचार्यप्रवर अपनी इस अहिंसा यात्रा के दौरान भारत देश की यात्रा तो कर ही रहे हैं, आपने विदेशों की भी यात्रा की। देश में भी कई स्थानों पर भाषा की समस्या रहती है। अनजान लोग मिलते हैं। फिर भी आचार्यवर जहां-जहां पधारते हैं, लोग अहोभाव से आपका स्वागत-अभिनन्दन करते हैं, आपके संदेशों को सुनकर आपके मिशन के साथ जुड़ते हैं। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रवचन करते हैं तो कई बार हजारों-हजारों लोग उपस्थित होते हैं। हिन्दी न जानने वाले लोग आपके मुखारविन्द से आपके भावों को पढ़ते हैं और उससे जीवन की सीख लेते हैं। आप जहां भी पधारते हैं, लोगों की समस्याओं को जानते हैं, समझते हैं, सुनते हैं और उनका समाधान भी सुझाते हैं। अहिंसा यात्रा के तीन संकल्पों को स्वीकार कर हजारों-हजारों लोगों ने अपने जीवन में नया रास्ता पाया है।

सहस्र किरणों का पुंज महासूर्य चेन्नई में उतर आया है और इस समवसरण तक पहुंच गया है। इसलिए अब चेन्नई के लोगों को निरंतर जागरूक रहकर उस सूर्य के आलोक में अभिस्नात होना है। आचार्यवर के इस प्रवास का चेन्नईवासी, चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय अथवा समुदाय से जुड़े हों, पूरा-पूरा लाभ उठाएं। आचार्यप्रवर के संदेशों को आत्मसात् करने से जीवन में निश्चित रूप से नया सूर्योदय हो सकता है।'

महाप्रतापी कीर्तिमान पुरुष हैं आचार्यप्रवर

मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर परोपकार को समर्पित साधक हैं। जो स्वकल्याण के साथ परकल्याण करते हुए निरंतर गतिमान हैं। कोलकाता पधारने तक आचार्यप्रवर की करीब ४१७६७ किलोमीटर की पदयात्रा हो चुकी थी और वह पदयात्रा चेन्नई पदार्पण के साथ ४४५०० किलोमीटर से भी ज्यादा हो चुकी है। तमिलनाडु सोलहवां राज्य है, जो आचार्यप्रवर के पदाभिषेक के बाद आचार्यप्रवर के पावन चरणकमलों से पवित्र बना है। आचार्यप्रवर एक कीर्तिमान पुरुष हैं, जो निरंतर नए-नए कीर्तिमान गढ़ते जा रहे

हैं। आचार्यप्रवर के शासनकाल में धर्मसंघ में अनेक-अनेक कीर्तिमान बने हैं। हमारा यह सौभाग्य है कि ऐसे महातपस्वी अनुशास्ता हमें प्राप्त हैं।

ऐसे महान प्रतापी, महान कीर्तिमान पुरुष का आज चेन्नई महानगर के माधावरम में चतुर्मास के लिए पदार्पण हुआ है। आज चेन्नईवासी अपने आपको धन्य महसूस कर रहे हैं। जिन क्षणों की उन्हें लंबे काल से प्रतीक्षा थी, वे क्षण आज उन्हें उपलब्ध हो गए हैं। हम मंगलकामना करते हैं कि आचार्यप्रवर का यह चतुर्मास नए-नए कीर्तिमान रचने वाला बने। चेन्नईवासियों के लिए यह दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण अवसर है, वे इसका भरपूर लाभ उठाएं।'

भक्तों के लिए कष्टों को सहते हुए चेन्नई में पधारे हैं आचार्यप्रवर

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने अभिभाषण में कहा—'परम पूज्य आचार्यवर का चेन्नई में पदार्पण महापुष्कल सम महामेघ की तरह हुआ है। आचार्यवर का यह पदार्पण दीर्घकाल तक यहां के लोगों में त्याग और तपस्या की खेती को लहलहाने का कार्य करेगा। आचार्यवर का यहां शुभागमन चेन्नईवासियों के सौभाग्य का निर्माण करने के लिए हुआ है। जिस प्रकार राजा अपने सुख को छोड़कर प्रजा के कल्याण के बारे में सोचता है, मुझे लगता है उसी प्रकार आचार्यप्रवर लोगों के कल्याण के लिए, उत्थान के लिए कितने-कितने कष्ट सहन कर रहे हैं और सहन करते-करते प्रलम्ब यात्रा करते हुए चेन्नई तक पधार गए हैं। आपने भूकंप की आपदा को सहन किया, ऋतुओं के प्रतिकूल प्रभाव को सहन किया, असम की तीव्र वर्षा को सहन किया, उत्तरप्रदेश में शीतलहरों को सहन किया और आंध्रप्रदेश की प्रखर गर्मी को भी सहन किया। स्थान की प्रतिकूलता को भी आपने सहन किया। आचार्यप्रवर अपने भक्तों को संभालने के लिए यहां पधारे हैं। उनके भीतर अध्यात्म के बीजों को केवल अंकुरित करने ही नहीं, बल्कि पल्लवित और पुष्पित करने के लिए भी यहां पधारे हैं।

परम पूज्य आचार्यप्रवर किस प्रकार अत्यधिक परिश्रम कर रहे हैं। प्रलम्ब यात्रा के बाद आचार्यप्रवर ने चेन्नई के उपनगरों में जो भ्रमण किया, वह सचमुच में महान निर्जरा का कार्य था। जहां-जहां आचार्यवर पधारे, वहां रहने वाले लोगों का एक ही स्वर था कि आचार्यवर ने तो हमें निहाल कर दिया। आचार्यप्रवर चेन्नई में चतुर्मास के लिए पधारे हैं। चेन्नईवासी आचार्यप्रवर की यात्रा के मिशन की ओर ध्यान केन्द्रित कर उसे सफल बनाने के लिए प्रयत्न करें और स्वयं भी उस मार्ग पर आगे बढ़ें।'

आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-बेंगलुरु के अध्यक्ष श्री मूलचंद नाहर ने बेंगलुरु चतुर्मास के संदर्भ में आमंत्रण प्रस्तुत किया। श्रीमती मीना पूनमिया ने पूज्यप्रवर से ३१ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सन् २०२१ का चतुर्मास भीलवाड़ा में घोषित

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने सन् २०२१ का चतुर्मास राजस्थान में मेवाड़ के भीलवाड़ा में करने की घोषणा की है। विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला